Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

शहडोल संभाग में पारिस्थितिकी पर्यटन विकास की समस्याएँ एवं संभावनाएँ

डॉ. एस.एम. प्रजापति

प्राध्यापक, भूगोल विभाग

शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुढ़ार,
जिला–शहडोल (म.प्र.)

पर्यटन एक ऐसी यात्रा (travel) है जो मनोरंजन (recreational) या फुरसत के क्षणों का आनंद (leisure) उठाने के उद्देश्यों से की जाती है। विश्व पर्यटन संगठन (World Tourism Organization) के अनुसार पर्यटक वे लोग हैं जो ष्यात्रा करके अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थानों में रहने जाते हैं, यह दौरा ज्यादा से ज्यादा एक साल के लिए मनोरंजन, व्यापार, अन्य उद्देश्यों से किया जाता है, यह उस स्थान पर किसी खास क्रिया से सम्बंधित नहीं होता है। 'पर्यटन दुनिया भर में एक आरामपूर्ण गतिविधि के रूप में लोकप्रिय हो गया है।'

प्राकृतिक सौन्दर्य व प्रकृति वर्णन से ओत–प्रोत उनके ग्रन्थों में आल्पस, फूलों, पशु पक्षियों, चन्द्रमा, सूर्य, आकाश, दिन–रात,सुबह–शाम आदि वस्तुओं और घटनाओं के प्रति मानवीय प्रेम भावनाओं को प्रदर्शित किया। इसी भवना ने यात्रा वृत्ति को भी अत्यधिक प्रभावित किया और 20 वीं शदी में यात्राओं के कारकों में यह विचार एक अहम कारक बनकर सामने आया और उत्पन्न हुआ, मनोरंजन, प्रकृति, दुश्यावलोकन हेतु यात्रा का क्रम जिसे कि 'टूरिज्म' आम बोलचाल की भाषा में प्रयोग करते है। 'यात्रा' व पर्यटन की परस्पर घनिष्ट संबंध है या सीमित शब्दों में यह कहा जा सकता है कि पर्यटन यात्रा की ही एक विशिष्ट अवस्था है। पर्यटन केवल यात्रा तक ही सीमित शब्द नहीं है बल्कि एक विस्तृत शब्द है। 18 वीं शदी में पर्यटकों की बढ़ती हुई संख्या ने पर्यटन को जन्म दिया। 19 वीं शदी तक विद्वानों ने इसे एक व्यवसाय के रूप में बढ़ाने की बात सोची, क्योंकि विदेशी पूंजी अर्जित करने का यह एक उत्तम व्यवसाय दृष्टिगोचर हो रहा था। 20वीं शदी तक पहुंचते–पहुंचते यह व्यवसाय यूरोप में बहुत लोकप्रिय व प्रभावपूर्ण सिद्ध होने लगा था इसीलिए कई देशों ने ही अपने देश का प्रमुख व्यवसाय बना लिया। आधुनिक समय में पर्यटन विस्तृत अर्थ में लिया जाने लगा।

पारिस्थितिकी पर्यटन की अवधारणा एवं महत्व–

पर्यटन से आर्थिक विकास की सोच के साथ ही इधर के वर्षों में पारिस्थितिकी पर्यटन की अवधारणा भी तेजी से उभरकर सामने आई है। पारिस्थितिकी पर्यटन के जरिए ही अब पर्यटन उद्योग के महती आधार के रूप में प्राकृतिक विरासत को न केवल बचाए रखा जा सकता है बल्कि दीर्घावधि जैव–विविधता संरक्षण उपायों और स्थानीय सामाजिक व आर्थिक विकास के बीच संबंध भी इसी से कायम रखा जा सकता है।

पारिस्थितिकी पर्यटन कहें या फिर पर्यावरण पर्यटन, इसके तहत पर्यटन का प्रबंधन तथा प्रकृति का संरक्षण इस तरीके से करना होता है कि एक तरफ पर्यटन व पारिस्थितिकी की आवश्यकताओं के बीच संतुलन बना रहे तो दूसरी तरफ स्थानीय समुदायों के रोजगार की जरूरतों की भी पूर्ति होती रहे। केंद्र सरकार ने पर्यटन उद्योग एवं गैर–सरकारी संगठनों आदि के परामर्श से देश में वर्ष 1998 में ही पारिस्थितिकी पर्यटन पर नीति और दिशा–निर्देश तैयार कर दिए थे।

पर्यटन विकास की पारिस्थितिकी समस्याएँ–

पारिस्थितिकी पर्यटन भारतीय परम्परा का एक अभिन्न हिस्सा रहा है। प्राचीन काल से ही यह अनौपचारिक रूप से एक उद्योग की तरह है।[अपप] सभी वर्गों के लोग इससे जुड़े रहे है। राजा, महाराज, व्यापारी, धर्म प्रचारक, अन्वेषक, चिन्तक एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते थे। हालांकि पर्यटन पुराने समय में अनौपचारिक क्षेत्र का हिस्सा था फिर भी सरायें, धर्मशालाओं और हवेलियों के रूप में यात्रियों के लिए सुविधाएँ मौजूद थी।

हमारे देश की प्राचीन संस्कृति, स्मारक, धरोहर, नैसर्गिक छटा यहाँ के पर्यटन को चार चाँद लगा सकती है। हमारा देश अपने बलबूते पर प्राचीन तथा प्राकृतिक सौन्दर्य की ऐसी छवि प्रस्तुत कर सकता है जो पर्यटन में विकसित राष्ट्रों की बराबरी कर सकता है।[अपप] भारत में पर्यटन विकास की प्रबल संभावनाओं के बावजूद आधारभूत सुविधाओं की कमी के कारण न केवल यह उद्योग तेजी से प्रगति करने में असमर्थ है, अपितु अपना वर्तमान बाजार भी खो बैठने की आशंका से ग्रस्त है। हवाई अड्डे, आव्रजन काउंटर, परिवहन

सुविधा, होटल कक्ष एवं सैरगाह आदि के विस्तार द्वारा मूलभूत सुविधाओं में वृद्धि करके ही भारत इस क्षेत्र में अपनी बेहतर स्थिति दर्ज कर सकता है और इस क्षेत्र की सम्भावनाओं का पूरा लाभ भी उठा सकता है।[अपप]

यहाँ की अनुकूल परिस्थितियों को देखते हुए अपने देश के हृदय स्थल में स्थित मध्यप्रदेश वं प्रदेश में स्थित शहडोल संभाग को एक आदर्श पर्यटन स्थल होना चाहिए था, किन्तु कई कारणों से ऐसा नहीं हो सका। यदि कई क्षेत्रों में अस्थिरता इसके लिए जिम्मेदार रही तो कहीं पर्यटन के लिए आवश्यक बुनियादी सुविधाओं का अभाव रहा है। कहीं कई आकर्षण पर्यटन स्थलों की पहचान न हो सकना, तो कहीं विदेशों में फैली हमारे बारे में प्रचलित भ्रांतियाँ भी आड़े है।

प्रदेश में ठहरने, सड़क, यातायात, विमान सेवा, रेल सेवा, बिजली, टेलीफोन, मनोरंजन, सफाई, परिसर व्यवस्था, नेचुरल ब्यूटी का निर्माण आदि सुविधाएँ न केवल कम हैं, बल्कि उनकी गुणवत्ता भी स्तरीय नहीं है। विदेशों में जगह–जगह भारतीय पर्यटन के कार्यालय जरूर खुल गये है लेकिन उनमें पेशेवर कुशलता की कमी है। केन्द्र एवं राज्यों, सरकारी एवं निजी एजेसिंयों के बीच तालमेल का नितांत अभाव है।

वर्तमान में पारिस्थितिकी पर्यटन समस्याओं और उस क्षेत्र की समस्याओं पर बहस चल रही है। कुछ लोगों का मानना है कि आधारभूत सुविधाओं की कमी के कारण पर्यटन उद्योग में भारत पिछड़ा हुआ है, जबकि दूसरी सोच यह है कि पर्यटन उद्योग देश में पर्यटन क्षेत्र की संभावनओं का पूरा फायदा उठाने में नाकाम रहा है। बात कुछ भी हो, किन्तु पर्यटन उद्योग के महत्व को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि वर्तमान में यह उद्योग आर्थिक वृद्धि का एक बहुत बड़ा क्षेत्र है।

पिछले अनुमान हमें यह बतलाते है कि पर्यटन व्यवसाय द्वारा न केवल विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकती, बल्कि इसके द्वारा करोड़ों लोगों को रोजगार भी उपलब्ध कराया जाकर देश की बेरोजगारी कम किया जा सकता है। शताब्दियों से भारत देश शेष विश्व के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है।[अपप] हमारे देश की गिनती उन कुछ देशों में होती है, जहाँ लगभग पाँच हजार वर्ष तक सभ्यता का निर्बाध विकास हुआ है।[अपप] इसी का परिणाम है कि यहाँ पर्यटन जैसी संभावनाएँ पैदा हुई है।

शहडोल संभाग में पर्यटन विकास की समस्याएँ–

भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया जिस तरह तेज हुई हैं पर्यावरणीय पर्यटन पूरी दुनिया में एक बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है।[अपप] वास्तव में पर्यटन मनोरंजन, आपसी भाईचारा, व्यापार, विनिमय, सांस्कृतिक

आदान–प्रदान एवं पर्यावरण संरक्षण का एक सशक्त माध्यम है। आज प्रत्येक देश अपनी खूबियों का प्रचार प्रसार करके पूरी दुनिया के पर्यटकों को अपने देश के पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है।[अपप] मध्यप्रदेश राज्य में पर्यटन की अथाह अलौकिक क्षमता का एहसास अब प्रदेश सरकार को भी हो गया है। प्रदेश सरकार पर्यटन को विकास के राह में मील का पत्थर मानने लगी है। इस दृष्टि को ध्यान में रखकर मध्यप्रदेश राज्य के पास पर्यटकों को आकर्षित करने की अपार क्षमताएँ हैं।

पर्यटन के हिसाब से प्रदेश के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक आकर्षण के संसाधनों के विपुल भण्डार हैं। यही वजह है कि यहाँ आने वाला पर्यटन एक प्रदेश में आकर भी अनेक देशों की विभिन्नता के आकर्षण का आनन्द प्राप्त करता है। प्रदेश सरकार ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा भी प्रदान कर दिया है। यह सब कदम स्वागत योग्य हैं, किन्तु दूसरी ओर सच्चाई यह भी है कि विश्व पर्यटन बाजार में हमारे देश का हिस्सा 2 प्रतिशत से भी कम है। हमारे देश के छोटे–छोटे पड़ोसी देशों में प्रतिवर्ष 50–50 लाख से अधिक पर्यटक पहँचते हैं, किन्तु अपने देश में ऐसा क्यों नहीं? यदि इसका विश्लेषण करे तो कहीं न कहीं राजनैतिक इच्छा शक्ति में कमी, अपर्याप्त आधारभूत सुविधाएँ तथा नियोजित विपणन का अभाव है।

पिछले कुछ वर्षो से केन्द्र तथा राज्य सरकार ने इस उद्योग को प्राथमिकता की श्रेणी में रखा है। उम्मीद है यह कदम आगे भी बढ़ता रहेगा।[अपप] मध्यप्रदेश में स्थित शहडोल संभाग अपनी प्राचीन विरासत, प्राकृतिक सौन्दर्य वन्य जीवों की बहुलता, धार्मिक तथा सांस्कृतिक धरोहर, परम्परागत उत्सव, त्यौहार एवं महोत्सवों की वजह से पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र हो सकता है। यहाँ के सुन्दर घने वन, कल–कल बहती नदियाँ, ऐतिहासिक धरोहर, पूरे वर्ष आयोजित होने वाले उत्सवों, महोत्सवों आदि विविध आकर्षण से भरपूर हैं, ऐसी उपयुक्त दशाओं से परिपूर्ण इस स्थल को एक आदर्श पर्यटन केन्द्र के रूप में पहचान होनी चाहिए थी, किन्तु कई कारणों से ऐसा नहीं हो सका। प्रस्तुत अध्ययन का एक उद्देश्य शहडोल संभाग में पारिस्थितिकी पर्यटन विकास की बाधाओं का पता लगाना भी है। शहडोल संभाग में पर्यटन विकास के मार्ग में आने वाली बाधाओं का बिन्दुवार अध्ययन निम्नानुसार है–

आवागमन या परिवहन की समस्या–

शर्मा, संजय कुमार[अपप] ने पर्यटन विकास का पहला तत्व पर्यटन केन्द्र की स्थिति एवं पहुँचने की सुगमता को बताया है। इस दृष्टि से पर्यटन केन्द्रों में परिहवहन एवं आवागमन की सुविधा पर्यटन विकास का

महत्वपूर्ण घटक हैं। अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास में आने वाली बाधाओं का विश्लेषण करने पर प्राप्त हुआ कि पर्यटन विकास में प्रमुख बाधा आवागमन के साधन या परिवहन की है। हम कह सकते हैं कि पर्यटन का पर्यटन स्थल में पहुँचने की सुगमता किसी भी क्षेत्र के पर्यटन वृद्धि एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

आवागमन की सुविधाएँ पर्यटन क्रिया को सबसे अधिक प्रभावित करती है। शहडोल संभाग में आने जाने की सुविधाओं में कमी पर्यटकों को आकर्षित करने में मार्ग की एक बड़ी बाधा है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह भू–भाग आवागमन के साधनों से सम्पन्न है, सड़कों के साथ ही ट्रेन यात्रा सुलभ है। मात्र हवाई यात्रा काफी कठिन है, निकटतम हवाई अड्डा जबलपुर है।

किसी भी स्थल को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने के लिए आधारभूत सुविधाओं में से परिवहन की सुविधा सबसे महत्वपूर्ण सुविधा है।[अपप] परिवहन सुविधाओं अभाव में कोई भी पर्यटक पर्यटन केन्द्रों तक पहुँचने में असमर्थ होता है।

शहडोल संभाग तक पर्यटकों को पहुँचना सुलभ है किन्तु इस क्षेत्र के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान तक की यात्रा करना कोई भी आसान काम नहीं है। अध्ययन क्षेत्र में विदेशी पर्यटकों के लिए निकटतम हवाई अड्डा जबलपुर व रायपुर है। विमानों के ईधनों पर ऊँचा कर लगाकर उससे मिट्टी के तेल को सब्सिडी देने की नीति के चलते घरेलू विमान किराये भी काफी ऊँचे हैं। ऐसे में माँग के बावजूद घरेलू विमान सेवाओं की पर्याप्त वृद्धि नहीं हो सकी है। यहाँ के पर्यटन केन्द्रों तक पहुँचने के लिए विमानों में जगह और उड़ाने दोनों ही कम है। इसका विकल्प सड़क मार्ग बचता है। इस क्षेत्र में कई रमणीक स्थल आज भी रोड से नहीं जुड़े है अतः पर्यटकों को उन स्थलों में पहुँचने के लिए भाड़े की टैक्सी का सहारा लेना पड़ता है। भाड़े की टैक्सी का कोई भी नियम या कायदा न होने के कारण जैसे ही उन्हें कोई अजनबी या विदेशी पर्यटक मिलता है उसका भरपूर आर्थिक शोषण कर लेते है।

वायु सेवा–

संभाग में वायु सेवा का अभाव है। यहाँ की निकटतम वायु सेवा जबलपुर एवं रायपुर से प्राप्त होती है। केवल जबलपुर एवं रायपुर पर्यटन केन्द्र ही विमान सुविधा का नियमित सेवा से जुड़ा है। अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि विदेशों से आने वाले पर्यटकों में 40 प्रतिशत ने पर्यटन के उपयुक्त समय में विमानों

में सीटे पूरा न होने की सूचना दी। साथ ही 15 प्रतिशत पर्यटकों ने अधिक किराये एवं 45 प्रतिशत पर्यटकों ने विमान सुविधाओं के कमी के बारे में जानकारी दी।

प्राथमिक सर्वेक्षण के दौरान जब घरेलू एवं विदेशी पर्यटकों से यात्रा मार्गो की दशा के बारे में जानकारी ली गई तो 75 प्रतिशत विदेशी तथा घरेलू पर्यटकों ने इस प्रदेश के मार्गो की हालत सामान्य बताया।

आवास एवं भोजन की समस्या–

आवास सुविधाएँ, पर्यटन उद्योग का एक महत्वपूर्ण अंग है। पर्यटन यात्रा की तीन महत्वपूर्ण एवं बुनियादी स्तम्भो–यात्रा, ठहरना व मनोविद में से एक का प्रतीक है।[अपप] शहडोल संभाग में पर्यटकों को ठहरने के लिए लॉज, सितारा होटल, टूरिस्ट बंगला आदि उपलब्ध हैं किन्तु यह सुविधा पर्याप्त एवं आरामदायक नहीं है। आवास के बारे में जानकारी का अध्ययन करने के लिए चुने गये पर्यटन केन्द्रों में केवल 51 प्रतिशत विदेशी पर्यटक अनूपपुर जिले में स्थित होटलों में ठहरे। 55 प्रतिशत विदेशी पर्यटकों ने इस कारण से यहाँ के होटलों में रूकने के लिए नहीं चुना क्योंकि उनका स्तर अच्छा नहीं था। रूके हुए विदेशी पर्यटकों में से 15 प्रतिशत पर्यटकों ने होटल की सुविधाओं को अपर्याप्त बताया। 12 प्रतिशत विदेशी पर्यटकों ने होटल की सुविधा को सामान्य बताया। केवल 10 प्रतिशत पर्यटकों ने उत्कृष्ट होने की जानकारी दिया।

मनोरंजनों के साधनों के विस्तार की समस्या–

अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन स्थलों में मनोरंजन के साधनों के विस्तार के लिए शासन तथा पर्यटन विकास निगम द्वारा कुछ प्रयास किये गये है तो कुछ प्रयास व्यक्तिगत संस्थाओं द्वारा किया गया है। अध्ययन के दौरान पाया गया कि इस दिशा में किया गया प्रयास केवल संभाग के अमरकण्टक तक ही सीमित रह गया है। सुविधाओं का उचित विकास नहीं हो पाया है। ऐसी स्थिति में पर्यटकों को मनोरंजन की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध न होने के कारण पर्यटन स्थलों में एक या दो दिन से अधिक रूकना पसन्द नहीं करते।

सुरक्षा की समस्या–

अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख तथा समीपी पर्यटन केन्द्रों में घरेलू तथा विदेशी पर्यटकों के सामने सबसे बड़ी समस्या सुरक्षा की समस्या है। क्षेत्र में विदेशी पर्यटकों का अध्ययन के दौरान पाया गया है कि विदेशी पर्यटकों को भ्रमण करने के दौरान कई सुरक्षा संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पर्यटन केन्द्रों में कुछ आवारा, बेरोजगार तथा चोर किस्म के लोग विदेशी पर्यटकों पर अपनी नजर बैठाये रहते हैं जैसे ही उन्हें मौका मिलता है घात लगाने तथा चोरी करने से नहीं चूकते है।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या–

अध्ययन क्षेत्र के समक्ष पर्यावरण की सुरक्षा की जटिल समस्या खड़ी है। पर्यावरण प्रदूषण का भूत प्रायः प्रत्येक क्रियात्मक क्षेत्र के साथ साथ पर्यटन में भी तेजी से फैलता जा रहा है।[अपप] अधिकतर पर्यटन मन की शान्ति प्राप्त करने और खुली हवा में साँस लेने के लिए यहाँ की पहाड़ियों की गोद में बसे स्थानों को देखने आते है वह जिस स्थान से चलता है वहाँ का प्रदूषण किसी टिकिया या साबुन से धोकर नहीं चलता वह उनको अपने साथ, अचार–विचार, वस्त्र, व्यवहार आदि में लेकर चलता है। उनमें से पुष्ट तत्वों को वह पर्यटन स्थलों पर छोड़ता है। पर्यटन केन्द्रों में रोजगार की तलाश में बड़ी संख्या में लोग बस रहे है। बड़ी–बड़ी इमारते बन रही है झुग्गी–झोपड़ियों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

निष्कर्ष–

पारिस्थितिकी पर्यटन कहें या फिर पर्यावरण पर्यटन, इसके तहत पर्यटन का प्रबंधन तथा प्रकृति का संरक्षण इस तरीके से करना होता है कि एक तरफ पर्यटन व पारिस्थितिकी की आवश्यकताओं के बीच संतुलन बना रहे तो दूसरी तरफ स्थानीय समुदायों के रोजगार की जरूरतों की भी पूर्ति होती रहे। केंद्र सरकार ने पर्यटन उद्योग एवं गैर–सरकारी संगठनों आदि के परामर्श से देश में वर्ष 1998 में ही पारिस्थितिकी पर्यटन पर नीति और दिशा–निर्देश तैयार कर दिए थे।

देश के हृदय स्थल में स्थित मध्यप्रदेश वं प्रदेश में स्थित शहडोल संभाग को एक आदर्श पर्यटन स्थल होना चाहिए था, किन्तु कई कारणों से ऐसा नहीं हो सका। यदि कई क्षेत्रों में अस्थिरता इसके लिए जिम्मेदार रही तो कहीं पर्यटन के लिए आवश्यक बुनियादी सुविधाओं का अभाव रहा है। कहीं कई आकर्षण पर्यटन स्थलों की पहचान न हो सकना, तो कहीं विदेशों में फैली हमारे बारे में प्रचलित भ्रांतियाँ भी आड़े है।

प्रदेश में ठहरने, सड़क, यातायात, विमान सेवा, रेल सेवा, बिजली, टेलीफोन, मनोरंजन, सफाई, परिसर व्यवस्था, नेचुरल ब्यूटी का निर्माण आदि सुविधाएँ न केवल कम हैं, बल्कि उनकी गुणवत्ता भी स्तरीय नहीं है। विदेशों में जगह–जगह भारतीय पर्यटन के कार्यालय जरूर खुल गये है लेकिन उनमें पेशेवर कुशलता की कमी है। केन्द्र एवं राज्यों, सरकारी एवं निजी एजेसिंयों के बीच तालमेल का नितांत अभाव है।

पर्यटन के हिसाब से प्रदेश के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक आकर्षण के संसाधनों के विपुल भण्डार हैं। यही वजह है कि यहाँ आने वाला पर्यटन एक प्रदेश में आकर भी अनेक देशों की विभिन्नता के आकर्षण का आनन्द प्राप्त करता है। प्रदेश सरकार ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा भी प्रदान कर दिया है। यह सब कदम स्वागत योग्य हैं, किन्तु दूसरी ओर सच्चाई यह भी है कि विश्व पर्यटन बाजार में हमारे देश का हिस्सा 2 प्रतिशत से भी कम है। हमारे देश के छोटे–छोटे पड़ोसी देशों में प्रतिवर्ष 50–50 लाख से अधिक पर्यटक पहँचते हैं, किन्तु अपने देश में ऐसा क्यों नहीं? यदि इसका विश्लेषण करे तो कहीं न कहीं राजनैतिक इच्छा शक्ति में कमी, अपर्याप्त आधारभूत सुविधाएँ तथा नियोजित विपणन का अभाव है।

आवागमन की सुविधाएँ पर्यटन क्रिया को सबसे अधिक प्रभावित करती है। शहडोल संभाग में आने जाने की सुविधाओं में कमी पर्यटकों को आकर्षित करने में मार्ग की एक बड़ी बाधा है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यह भू–भाग आवागमन के साधनों से सम्पन्न है, सड़कों के साथ ही ट्रेन यात्रा सुलभ है। मात्र हवाई यात्रा काफी कठिन है, निकटतम हवाई अड्डा जबलपुर है।

अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख तथा समीपी पर्यटन केन्द्रों में घरेलू तथा विदेशी पर्यटकों के सामने सबसे बड़ी समस्या सुरक्षा की समस्या है। क्षेत्र में विदेशी पर्यटकों का अध्ययन के दौरान पाया गया है कि विदेशी पर्यटकों को भ्रमण करने के दौरान कई सुरक्षा संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पर्यटन केन्द्रों में कुछ आवारा, बेरोजगार तथा चोर किस्म के लोग विदेशी पर्यटकों पर अपनी नजर बैठाये रहते हैं जैसे ही उन्हें मौका मिलता है घात लगाने तथा चोरी करने से नहीं चूकते है।

संदर्भ–

vii शुक्ला, कृष्णा–सागर संभाग में पर्यटन विकास की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ, अप्रकाशित शोध प्रबंध अ.प्र.सिंह विश्वविद्यालय रीवा

vii पाण्डेय, मनीष (2002)–विध्यन कगारी प्रदेश में पर्यटन की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ, अप्रकाशित शोध प्रबंध, अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा

vii सिंह बी.पी.–विन्ध्य प्रदेश में पर्यावरणीय विविधताएँ एवं पर्यटन, अप्रकाशित लघु शोध परियोजना (UGC/CRO) भोपाल

vii शुक्ला, कृष्णा–सागर संभाग में पर्यटन विकास की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ, अप्रकाशित शोध प्रबंध अ.प्र.सिंह विश्वविद्यालय रीवा

vii पाण्डेय, मनीष (2002)–विध्यन कगारी प्रदेश में पर्यटन की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ, अप्रकाशित शोध प्रबंध, अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा

vii पटेल, सुधीश कुमार–पर्यटन उद्योग का बदलता चेहरा, कुरूक्षेत्र, वर्ष 54, अंक 7, मई 2008

vii सिंह, बी.पी. (2014)–पर्यटन विकास समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ, आशा पब्लिशिंग कं. आगरा

vii सिंह, डी.पी. (2010)–दमोह जिले में पर्यटन विकास की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ

vii सिंह, डी.पी. (2010)–दमोह जिले में पर्यटन विकास की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ

vii शुक्ला, कृष्णा–सागर संभाग में पर्यटन विकास की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ, अप्रकाशित शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा

vii शुक्ला, कृष्णा–सागर संभाग में पर्यटन विकास की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ, अप्रकाशित शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा

vii सिंह, डी.पी. (2010)–दमोह जिले में पर्यटन विकास की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ